मासिक पत्रिका सितम्बर 2018

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

मनुष्य श्रेष्ठ मनुष्य कैसे बने?

-महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

(आर्य समाज हनुमान रोड में दिये प्रवचन के अंश)

महात्मा चाणक्य भारत के महामन्त्री थे। पाटलिपुत्र के बाहर जिसे आजकल पटना कहते हैं, गंगा के किनारे एक झोंपड़ी में रहते थे। मिट्टी के बर्तनों में खाना खाते थे, परन्तु प्रतिदिन प्रातः उठकर क्या प्रार्थना करते थे? यह कि हे भगवन्! यदि मुझसे कोई अपराध हो गया हो तो मेरी झोंपड़ी छीन लें, मेरे मिट्टी के बर्तन ले ले, मेरा स्वास्थ्य ले ले, परन्तु मेरी बुद्धि न लेना।

धन नहीं माँगते थे, सेना नहीं माँगते थे, भगवान् से बुद्धि माँगते थे। सुबुद्धि से ही मनुष्य मनुष्य, बनता है।

वेद और उपनिषदों में बारम्बार इस बुद्धि के महत्त्व का वर्णन आता है। उपनिषदों का विषय है ईश्वर-दर्शन। ईश्वर प्रत्येक स्थान पर विद्यमान है परन्तु दृष्टिगोचर नहीं होता। किसको दिखाई देता है वह? उसको जिसकी बुद्धि सूक्ष्म हो गई है। यह बुद्धि मानव-रूपी नौका की नाविक है; ठीक रहे तो पार लगाती हे, न रहे तो डुबो देती है।

और यह बुद्धि बनती कैसे है? बिगड़ती कैसे है? हमारे ऋषियों ने इसके सम्बन्ध में खोज की। उन्होंने कहा-बुद्धि तीन प्रकार की होती है-एक बुद्धि, दूसरी कुबुद्धि, तीसरी सुबुद्धि। यह सुबुद्धि ही सबसे उत्तम है, परन्तु इनको अभी और माँजो, और साफ़ करो तो बनती है मेधा-ऐसी बुद्धि जिसने एक सच्चे विश्वास को अपना लिया है; इसके मार्ग पर धारणा धरके वह आगे बढ़ती है।

मेधा को भी माँजो, और आगे बढ़ो तो बनती है सुमेधा।

इसको और माँजो, और आगे बढ़ो तो बनती है प्रज्ञा, ऐसी बुद्धि जिससे तमोगुण दूर हो गया है, केवल रजोगुण और सतोगुण शेष हैं।

इसको भी माँजो, आगे चलो, तब बनती है प्रतिभा। व्यास महाराज ने योग-शास्त्र का भाष्य लिखते हुए कहा-माथे के अन्दर एक चमकता हुआ तारा वहाँ लगा दिया जाय, ध्यान को इधर-उधर न होने दिया जाये तो प्रतिभा जागती है। आंग्ल भाषा में इसे (Intutional Insight) कहते हैं।

इन्द्रियों के संस्कार मनुष्य को तंग करते हैं, उसे उल्टे मार्ग पर ले जाते हैं, बुद्धि को कुमार्ग पर ले जाते हैं। बुद्धि को ठीक रखना है तो इन्द्रियों को वश में करो। परंतु इन्द्रियों का सेनापति है मन। पाँच कर्मेन्द्रियाँ और पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, दस-की-दस इसके अधीन हैं। परन्तु मन को कैसे वश में किया जाये? सत्संग से। सत्संगी बन। अच्छी संगति में बैठ, उत्तम पुस्तकों को पढ़। माता-पिता श्रेष्ठ हों और संगति मिल जाये बुरी तो मन कुमार्ग पर चल पड़ता है।

भगवान् राम बैठे थे जंगल में। उनके पास बैठे थे श्री लक्ष्मण जी। दोनों भाइयों में मन के सम्बन्ध में चर्चा हो रही थी। लक्ष्मण ने कहा, भय्या! यह मन तो बहुत बलवान् है, इसे वश में करने का प्रयत्न करो तो और भी फिसल जाता है।

ऐसी अवस्था में लक्ष्मण ने पूछा-किसका मन चलायमान नहीं होता?

भगवान् राम ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया-

पिता यस्य शुचिर्भूतो माता यस्य पतिव्रता।

..... तस्य न चलति मनः॥

जिसका पिता पवित्र भावना वाला है, जिसकी माता पतिव्रत धर्म का पालन करने वाली है, ऐसे माता-पिता की जो सन्तान है, उसका मन चलायमान नहीं होता।

परन्तु मैं वहाँ बैठा होता तो कहता-महाराज! माता-पिता भले ही अच्छे हों, यदि संगति ही बुरी मिल गई है तो उस व्यक्ति का मन चलायमान होगा। माता-पिता भले ही अच्छे हों, पुत्र को

यदि उनके संस्कार न मिले, बुरी संगत में पड़कर बुरे संस्कार मिल गए तो वह सुधरेगा कैसे? अपनी सन्तान को प्रेरणा करो कि सत्संग में चलो। उनके बहाने न सुनो। प्राय: वे कहते हैं-सत्संग में जाने का समय कहाँ है? आप कथा में चले आते हैं। वे पीछे से नॉविल पढ़ते हैं, ओर फिर जैसी संगत वैसा फल। पानी है न, अमरूद के वृक्ष में जाए तो अमरूद बन जाता हे, लाल मिर्च के पौधे में जाए तो लाल मिर्च बन जाता है, आम के वृक्ष में जाये तो मीठा-रसीला आम बन जाता है, पानी तो वही है, संगत से उसका गुण बदल जाता है। आपका बच्चा पानी की भाँति है, जैसी संगत उसे मिलेगी वैसा वह हो जाएगा।

बुद्धि को ठीक रखने का अगला उपाय है स्वाध्याय, उत्तम पुस्तकों को पढ़ना। वेद या उपनिषद्, गीता, सत्यार्थ प्रकाश, रामायण, महाभारत के उत्तम-उत्तम स्थल-ऐसी धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने से प्रकाश मिलता है, मार्ग मिलता है। गीता पढ़ो तो आपका सम्बन्ध श्री कृष्ण के साथ हो जाता है। आप उस महान् योगीराज के पास पहुँच जाते हैं। उपनिषदें पढ़ा तो महर्षि याज्ञवल्क्य आपके समक्ष आ जाते हैं, नचिकेता आ जाता है। 'शतपथ ब्राह्मण' में लिखा है कि स्वाध्याय से स्वयंमेव दृष्टिगोचर हो जाता है। प्रत्येक समस्या का समाधान मिलता है, मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं।

इसके पश्चात् बुद्धि को ठीक रखने का उपाय है-मन को प्रसन्न रखना, प्रत्येक अवस्था में प्रसन्न रखना।

स्मरण रक्खो! प्रसन्न रहना बहुत बड़ा गुण है। प्रसन्न रहने वाले की बुद्धि की पंखुड़ियाँ इस प्रकार खिली रहती हैं जैसे फूल खिल जाता है; और जो दु:खी रहता है उसकी ये पंखुड़ियाँ सिकुड़ जाती हैं, जल जाती हैं। दु:ख से, ईर्ष्या से, घृणा और क्रोध से बुद्धि के रेशे इस प्रकार जल जाते हैं कि सारा शरीर जलने लगता है, रोगी होने लगता है।

चित्त प्रसन्न हो, उसकी प्रसन्नता से सब दु:ख समाप्त हो गये हों तो ऐसे व्यक्ति की बुद्धि शीघ्र ही भगवान् के चरणों में टिक जाती है। सब-कुछ ठीक हो जाता है। भगवान् के चरणों में पहुँच गये तो आनन्द ही-आनन्द है, फिर प्रसन्न क्यों न रहें भाई!

बुद्धि के बिना भाग्य व्यर्थ है। बुद्धि से भाग्य बनता है। बुद्धि न हो तो सौभाग्य भी दुर्भाग्य बन जाता है। अरे! देखते नहीं, सबसे अधिक अमीरों के बच्चे बिगड़ते हैं। भाग्य उनके पास होता है, बुद्धि बिगड़ जाती है, इसलिए अपने हाथ से अपने लिए वे विनाश जगा लेते हैं।

बुद्धि ठीक मार्ग पर चली जा रही है या नहीं-इसका पता स्वाध्याय से लगता है। तब बुद्धि को श्रेष्ठ बनाने, सुमार्ग पर ले-जानेवाली अगली वस्तु है नम्रता। अभिमान न कर, नम्र बन, क्योंकि अभिमान का सिर सदा नीचा होता है। जिसके पास नम्रता है, जिसके चारों ओर मधुरता गाती रहती है, उसकी बुद्धि उसे ठीक मार्ग पर ले जाती है। नम्रता से बहुत बड़ी विशेषता आती है मनुष्य में-

लेने को हरिनाम है, देने को कुछ दान।
तारन को है नम्रता, डूबन को अभिमान॥

जितना ऊँचा उठे मनुष्य, जितना धनी हो, जितना शक्तिशाली हो, उतनी ही उसमें नम्रता आनी चाहिए, तब वह व्यक्ति वास्तव में बड़ा होता है।

अभिमान बुद्धि को बिगाड़नेवाला है। नम्रता उसे सुमार्ग पर ले जाती है। और फिर नम्रता से एक लाभ भी है। जो ज्ञानी लोग हैं वे नम्र मनुष्य को ही अपना ज्ञान देते हैं जो अभिमान से अकड़ा बैठा है उसे कोई कुछ नहीं देते। बुद्धि के पश्चात् एक और वस्तु है हृदय, जिसे प्राय: लोग दिल कहते हैं। हृदय शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बना है। 'ह्'-लेता है, 'द'-देता है और 'य'-चलता है।

बृहदारण्यक उपनिषद् का ऋषि कहता है कि हृदय में प्रजापति रहता है, वही इसको असुर=राक्षस बना देता है, वही इसको आध्यात्मिक ऊँचाइयों पर ले-जाकर देवता बना देता है।

उपनिषद् के ऋषि ने कहा कि इस हृदय में प्रजापति रहता है। केवल अच्छे विचार उत्पन्न हों, केवल भगवान् की भक्ति के लिए भावना उत्पन्न हो और उस पर आचरण हो तो मनुष्य देवता बन जाता है। केवल बुरे विचार उत्पन्न हों, केवल प्रकृति के बन्धनों में और अधिक जकड़े जाने की इच्छा उत्पन्न हो और उसके अनुसार आचरण हो तो मनुष्य राक्षस बन जाता है; और दोनों प्रकार के मिले-जुले विचार हों तो मनुष्य बन जाता है।

पश्चिमी Philosophers का वेदों पर विचार

1. **लियो टॉल्स्टॉय (1828-1910) :** "वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता ही एक दिन दुनिया पर राज करेगी क्योंकि इसी में ज्ञान और बुद्धि का संयोजन है।"

संसार में अनेकों भाषाओं का निर्माण कैसे हो गया?

ईश्वर का हर कार्य पूर्ण है और अगर भाषा ईश्वर ने मनुष्य को दी तो वे भी एक सी और पूर्ण होनी चाहिए।

ऋग्वेद दुनिया की सबसे पुरातन पुस्तक है। भाषा वैज्ञानिक ऋग्वेदकाल से ही जनसामान्य में बोलचाल की भाषा संस्कृत को ही मानते हैं। आज दुनिया में लगभग 7000 भाषाएँ प्रचलित हैं और इन सभी भाषाओं में संस्कृत भाषा का सर्वाधिक योगदान रहा है। संस्कृत से अन्य भाषाओं की उत्पत्ति मिलावट या परिवर्तन करोड़ों वर्षों में होता चला गया। हर समय अभी भी भाषाओं में मिलावट होती जा रही है जो कि मनुष्य मानस का निठल्ला और अशुद्ध स्वभाव है। आधुनिक भाषा विज्ञानिक मानते है कि संसार की समस्त भाषाओं में संस्कृत के शब्द पाये जाते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि संस्कृत इनकी मूल भाषा रही होगी। उदाहरण के लिए ईश्वर ने मनुष्य बनाया और उसे मनुष्यता के गुण दिये। लेकिन हम हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बौद्ध पारसी यहूदी जैन बनते गये। यह क्रम अभी रुका नहीं है और हर मत/समूह ने आपनी भाषा और लिपि बना ली और उसी को पूर्ण मान कर गर्व कर लिया।

नासा (NASA) के पास संस्कृत में ताड़पत्रों पर लिखी 60,000 पांडुलिपियाँ है जिन पर नासा रिसर्च कर रहा है।

फ़ोर्ब्स मैगज़ीन ने जुलाई, 1987 में संस्कृत को कम्प्यूटर सॉफ़्टवेयर के लिए सबसे बेहतर भाषा माना था।

किसी और भाषा के मुकाबले संस्कृत में सबसे कम शब्दों में वाक्य पूरा हो जाता है।

नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार जब वो अंतरिक्ष ट्रैवलर्स को मैसेज भेजते थे तो उनके वाक्य उलट हो जाते थे, इस वजह से मैसेज का अर्थ ही बदल जाता था। उन्होंने कई भाषाओं का प्रयोग किया लेकिन हर बार यही समस्या आई आखिर में उन्होंने संस्कृत में मैसेज भेजा क्योंकि संस्कृत के वाक्य उल्टे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते हैं।

आपको जानकर हैरानी होगी कि कम्प्यूटर द्वारा गणित के सवालों को हल करने वाली विधि यानि Algorithms संस्कृत में बने है–ना कि अंग्रेजी में।

नासा के वैज्ञानिकों द्वारा बनाए जा रहे 6th और 7th जनरेशन सुपर कम्प्यूटर्स संस्कृत भाषा पर आधारित होंगे जो 2034 तक बनकर तैयार हो जाएंगे।

इसलिए लंदन और आयरलैंड के कई स्कूलों में संस्कृत को Compulsory Subject बना दिया है।

इस समय दुनिया के 17 से ज़्यादा देशों की कम से कम एक यूनिवर्सिटी में तकनीकी शिक्षा के विषयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है।

इससे सिद्ध होता है कि संस्कृत भाषा ईश्वर की ही मनुष्य को पूर्ण व सर्वश्रेष्ठ देन है। ■■

सौजन्य–वेद संस्थान, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

सितम्बर 2018 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
02	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	जन्माष्टमी।
09	आचार्य चन्द्र शेखर शास्त्री (9871020844)	गोरक्षा सफल कैसे हो।
16	श्री वेद कुमार वेदालंकार (9810106562)	प्रश्नोपनिषद् का सार।
23	श्री नरेश सोलंकी (9818985959)	भजन।
30	डॉ. उमा, प्रो. सत्यवती कॉलेज	पश्य देवस्य काव्यं – नममार न जीर्यति (ईश्वर के काव्य (रचना) को देखो–न नष्ट होता है न जीर्ण (अथर्वेद)।

2. बरट्रेंड रसेल (1872–1970) : "मैंने वेदों को पढ़ा और जान लिया कि यह सारी दुनिया और सारी मानवता का धर्म बनने के लिए है, वैदिक धर्म पूरे यूरोप में फैल जाएगा और यूरोप में सनातन धर्म के बड़े विचारक सामने आएंगे। एक दिन ऐसा आएगा कि आर्य संस्कृति ही दुनिया की वास्तविक उत्तेजना होगा"।

अगस्त मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती सन्तोष मुंजाल	35,000/-	श्री प्रेम कृष्ण बहल	3,100/-	श्रीमती वनीता कपूर	1,100/-
श्रीमती वीना कश्यप	17,000/-	श्रीमती वनीता कपूर	3,000/-	श्री नरेन्द्र वाधवा	1,100/-
श्रीमती रेनू मुंजाल	11,000/-	श्रीमती प्रेम शर्मा	2,100/-	आर्य समाज कालका जी	1,100/-
श्रीमती पुष्पा मलिक	11,000/-	श्रीमती रक्षा पुरी	2,100/-	कर्नल गोपाल वर्मा	1,100/-
श्रीमती सतीश सहाय	10,775/-	श्रीमती सुदर्शन बजाज	2,100/-	श्रीमती मन्जू बहल	1,100/-
श्रीमती अमृत पॉल	7,200/-	श्री सुनील अबरोल	2,100/-	श्री ऋषि रजवाल	1,100/-
श्रीमती उषा मरवाह	7,200/-	श्रीमती सुधा गर्ग	2,100/-	श्री शादी लाल गेरा	1,100/-
श्री राजीव चौधरी	6,200/-	श्री जुगल किशोर	2,100/-	श्रीमती विजय मेहता	1,000/-
श्री इन्द्र सैन साहनी	5,100/-	श्रीमती कान्ता भारद्वाज	2,100/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
श्रीमती सीता पॉल	5,100/-	श्रीमती शारदा भाटिया	2,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
गुप्त दान	5,100/-	श्रीमती रेनू सहगल	2,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्रीमती वीना कश्यप	5,100/-	श्रीमती एवं श्री अमृत लाल कपूर	2,100/-	श्रीमती रेनू शर्मा	1,000/-
M/s मुंजाल शोवा लि.	5,100/-	श्री अरुण कुमार बहल	2,100/-	श्री दयानन्द मनचन्दा	1,000/-
M/s तनेजा फाउण्डेशन (C/o श्री आर.के. तनेजा)	5,100/-	श्रीमती सत्या ढिंगरा	2,000/-	श्री प्रेम सहगल	1,000/-
श्री रमन कुमार मेहता	5,100/-	श्री विमल जैद एवं श्री एच.एल. कौल	1,500/-	भारत विकास परिषद्	1,000/-
श्री सनत कुमार बहल	5,000/-	श्री एस.एल. आनन्द	1,100/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	700/-
श्री रसलीन बाबा	5,000/-	श्री अशोक चोपड़ा	1,100/-	श्री शील कपूर	500/-
श्री आशीष गोयल	5,000/-	श्री विजय लखनपाल	1,100/-	श्री ईश्वर चन्द्र अरोड़ा	500/-
डॉ. एस.एस. यादव	5,000/-	श्रीमती प्रभा खाण्डपुर	1,100/-	श्री वीरेन्द्र सूद	500/-
श्री कपिल देव शर्मा	5,000/-	श्री महेश आर्य	1,100/-	श्रीमती शशि मल्होत्रा	500/-
श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा	4,200/-	श्रीमती सवीता शर्मा	1,100/-	श्रीमती प्रेम सहगल	500/-
डॉ. विनोद मलिक	3,400/-	श्रीमती सुशीला गुलाटी	1,100/-	श्रीमती शशि स्वरूप अहुजा	500/-
श्री एस.सी. सक्सेना	3,200/-	श्री विद्या सागर सरीन	1,100/-	आर्य समाज मदनगीर	500/-
श्री सुनील कुमार मेहता	3,100/-	श्रीमती सुधा सरीन	1,100/-	श्री सुभाष चन्द्र अमर	500/-
श्री राजीव भटनागर	3,100/-	सुश्री आदर्श भसीन	1,100/-	आर्य समाज सन्त नगर	500/-
श्री अमर सिंह पहल	3,100/-	श्री नरेश ठुकराल एवं श्रीमती अमला ठुकराल	1,100/-	श्रीमती शशि मल्होत्रा	500/-
श्रीमती सुदेश चोपड़ा	3,100/-			श्री संजीव चड्डा	500/-
श्री एस.सी. गर्ग	3,100/-	श्रीमती हरदीप कपूर	1,100/-	श्री कमलेश कुमार वोहरा	500/-

अगस्त माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि :

❖ श्री वेद कुमार वेदालंकार ₹ 5,000/- ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ 34,300/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

❖ श्री अभिषेक भटनागर ₹ 31,000/- ❖ श्रीमती अमृत पॉल ₹ 11,000/-

अन्य दान: ❖ श्री अशोक रायचन्द 1 Wheel Chair (old), 1 Stick, 1 Back Seat, 2 Accu-Chek Strips & Medicines

❖ श्री योगेश मुंजाल जी (मेडिकल सैन्टर में रंग-रोगन एवं सफेदी) ₹ 3,65,192/-

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली

दिनांक : 25-26-27-28 अक्टूबर 2018

स्थान: स्वर्ण जयन्ती पार्क, सैक्टर-10, रोहिणी, नई दिल्ली